कहानी

वह निशानेबाज

श्याम सिंह

कैलाश बगल में थैला लटकाए जब इलाहाबाद बैंक का मोड़ पार कर रहा था, उसे रिक्शे पर बैठा एक युवक दिखा । वह लाउडस्पीकर से मेला गणेश चौथ शुरू होने का प्रचार कर रहा था ।" इसी माह की सात तारीख को गणेश भगवान की रथ यात्रा निकलेगी ।"

उस युवक के मुंह से ऐसा सुनते ही कैलाश का चेहरा खिल उठा। सुबह से भूखा होने पर भी उसके चेहरे पर अद्भुत संतुष्टि की चमक कौंध उठी। उसकी नजरें बरबस शून्य की ओर उठीं शायद कुछ खोजने के लिए। पूरे वर्ष उसके दिलों दिमाग पर इस बार गणेश चौथ के मेले से एयर पिस्टल खरीदने की इच्छा भादों की काली घटा की तरह छाई रही। कल ही उसने अपनी गुल्लक उठाकर देखी जो पूरी भर गई थी वह उसे फोड़कर रुपए गिनने की इच्छा यह सोचकर दबाए हुए था कि मेला शुरू होने से एक दो दिन पहले ही गुल्लक फोड़कर देखेगा, तब से ही यह इच्छा बरसने को आतुर बादल की भांति उमड़ रही है। अपने घर में छायी अभाव की धूप व भूख की अग्नि से बचाते हुए यह रुपए इकट्ठे किए हैं, मेले से एयर पिस्टल खरीदने के लिए।

कैलाश जब चंदौसी पब्लिक स्कूल में कक्षा चार में पढ़ता था, तब उसकी अंग्रेजी की मैम का लड़का अनु एयर पिस्टल से खेलता था। उसने भी एयर पिस्टल गणेश चौथ के मेले से खरीदी थी, वह तब कक्षा पांच में पढ़ता था। इंटरवेल में अनु एयर पिस्टल से निशाना लगाता था। सभी बच्चे उसके चारों ओर लगे रहते थे। वह बारी बारी से दूसरे बच्चों को भी एयर पिस्टल से निशाना लगाने के लिए देता था। कैलाश यह सब दूर से ही देखता था। वह बड़े ध्यान से देखता था कि कैसे अनु तथा अन्य बच्चे निशाना लगाते हैं। कोई एक बार सही निशाना लगाता तो कोई दो बार तो किसी किसी का छर्रा निशाने से अलग ही लगता। कैलाश को दूर खड़ा देखकर एक दिन अनु ने उससे कहा "अरे कैलाश तुम भी निशाना लगाओ ।" कैलाश ने भी निशाना लगाया। उसके लगातार पांच छर्रे निशान पर लगे। यह देख कर सभी सन्न रह गए, सभी ने उसका उत्साह बढ़ाया। अंग्रेजी की मैम दूर से यह सब देख रही थी। उन्होंने कैलाश को अपने पास बुलाया और कहा- "शाबाश! अगर तुम रोज निशाना लगाने की प्रैक्टिस करोगे तो बहुत अच्छा निशाना लगा सकते हो। एक बहुत अच्छे निशानेबाज बन सकते हो, राज्यवर्धन राठौर की तरह ।"

श्याम सिंह हिन्दी साहित्य के युवा कथाकार हैं । वर्तमान में विजय सिंह पथिक राजकीय महाविद्यालय कैराना, शामली में हिन्दी विषय के शोधार्थी हैं।

कैलाश जब घर आया तो उसने अपने पिता से एयर पिस्टल लाकर देने को कहा और स्कूल में अपने सही निशाना लगाने तथा मैम द्वारा शाबाशी दिए जाने की बात भी उसने अपने पिता जी से कही। कैलाश ने अपने पिता को बताया- "मैम कह रही थीं तुम रोज निशाना लगाने की प्रैक्टिस करोगे तो एक दिन राज्यवर्धन राठौर की तरह एक अच्छे निशानेबाज बन सकते हो।"

अपने पुत्र की वात्सल्य मिश्रित जिद के आगे पिता सिर्फ इतना कह पाए – "हां बेटा, अबकी बार गणेश चौथ के मेले से तुझे भी एयर पिस्टल लाकर दूंगा।"

चंदौसी फुब्बारा चौक पर जूता गांठने का कार्य करने वाले उसके पिता यह भी नहीं जानते थे कि राज्य वर्धन राठौर है कौन?

"गणेश चौथ का मेला कितने दिन बाद आएगा पापा ?"

कैलाश बार-बार अपने पिता से यही सवाल करता।

"बस कुछ ही दिन बाद आने वाला है बेटा।" उसके पिता हर बार यही जवाब देते। परंतु वे कुछ दिन शायद कभी ना आ सके। कैलाश के पिता क्षय रोग से पीड़ित थे कम आय की वजह से उनका इलाज नहीं हो सका। इधर कोई और कमाने वाला नहीं था। इसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई। कैलाश के परिवार के बाग को सींचने वाला बादल का एकमात्र टुकड़ा समय के सूर्य की गर्मी से पिघलकर बह गया।

कैलाश अपने भाई बहनों में सबसे बड़ा था। अपने पिता का सबसे प्यारा इसलिए उसे पढ़ने के लिए स्कूल भेजा। अब पिता जी के ना रहने पर घर का बोझ भी उसी के कंधों पर अधिक आया। शायद यह पिता से मिलने वाले अतिरिक्त प्यार की कीमत थी, जो उसे अपनी पढ़ाई छोड़कर चुकानी पड़ी। अब वह स्कूल की बजाय रोडवेज तथा रेलवे स्टेशन पर जूता पालिश करने जाने लगा, जैसा कि उसके मोहल्ले के बाकी बच्चे भी करते थे। उसकी मां चंदौसी बदायूं रोड पर स्थित कोल्ड स्टोरेज में आलू की छंटाई करने जाती ही थी। अब कैलाश के लिए स्कूल जाना सपने की बात हो चुकी थी।

वह रोज बड़े उत्साह से पैदल ही जूता पालिश करने रोडवेज तथा रेलवे स्टेशन पर जाता। स्कूल की सड़क पर यदि वह पहुंच जाता तो बड़ी वितृष्णा महसूस होती, मन एक तरह की खिसियाहट से भर जाता, परंतु एयरपिस्टल से खेलने का नशा, निशाना लगाने का जुनून अभी भी सीने में हिलोरें भरता। वह अपनी मां से भी एयर पिस्टल लाकर देने की ज़िद करने लगता।

उसकी मां समझाती- "बेटा अब तू समझदार हो गया है, यह सब बड़े लोगों के शौक हैं, पूरे दिन में इतनी मेहनत करने के बाद भी हम सौ दो सौ रुपए ही कमा पाते हैं, जोकि घर का खर्च चलाने के लिए भी पूरे नहीं बैठते फिर मैं तुझे पांच सौ रुपए का एयर पिस्टल कैसे खरीद कर दूं, फिर तू अकेला तो है नहीं।"

यह कहते कहते मां भावुक हो जाती और उसकी लाचारी की गवाही देने के लिए उसकी आंखों से दो चार आंसुओं के मोती झर पड़ते। एयर पिस्टल से निशाना लगाने की धुन निशानेबाज बनने का नशा कैलाश के बाल मन में लगी एक फांस थी, जो अब शायद नासूर बन चुकी थी, जिसके वशीभूत होकर वह कभी-कभी नाराज हो जाता था, मां से झगड़ा तक कर लेता। कभी वह रोटी खाना बंद कर देता, तो कभी बीमारी का बहाना कर घर में ही पड़ा रहता, परंतु लाचारी तथा वेबसी की गिरफ्त में फंसी उसकी मां उसका कुछ भी समाधान ना निकाल पाती।

> कैलाश के पास सिर्फ बीस रुपए थे। उसे अपनी बेबसी पर बहुत क्रोध आया। वह मेले में घूमता रहा। घूमते घूमते उसने सोचा- "क्यों ना इन पैसों को बचा कर रखा जाए और अगली बार के मेले तक मां से छुपा कर कुछ और पैसे इकट्ठे कर एयर पिस्टल खरीदा जाए।" यह विचार उसे गुल्लक बिकते देखकर आया। उसने एक रुपए में एक गुल्लक खरीदी और वह तुरंत घर आकर मां से आंख बचाकर एक एक रुपया कर, पैसे इकट्ठे करने में जुट गया।

एक बार जब गणेश चौथ का मेला आया। कैलाश की मां ने उसे बीस रुपए मेला देखने को दिए। कैलाश मेला देखने गया, मेले में उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगा। वह खिलौनों की दुकान पर गया और एयर पिस्टल की तरफ देखता रहा। उसने कल्पना में ही उसे चला कर देखा। निशाना लगाया। खम्बे पर निशान लगाया। रजनीश ताऊ के दरवाजे पर लगा बल्ब, जो जलता तो ऐसा लगता जैसे हमारे घर की सारी खुशियां ही इसमें जल रही हैं। मां कहती- "इन्होंने तेरे दादा दादी के मरने के बाद बंटवारे में बड़ी बेईमानी की हमें अंदर का मकान दिया और खुद ने सड़क के किनारे का मकान कब्जा लिया, इसमें अब चार दुकानें भी बनवा लीं हैं। तेरे दादा दादी ने इन्हें पढ़ाया लिखाया और तेरे पापा दादा के साथ जूते बनाते, अब इन्हें नौकरी मिल गई। तेरे पापा इतने बीमार हुए मरते समय तक एक बार पूछा तक नहीं कि भाई तुझे क्या हुआ।"

मां के कहे अनुसार कैलाश के मन में रजनीश ताऊ के लिए नफरत का ज्वालामुखी सुलग रहा था। सबसे ज्यादा नफरत उसे

इस बल्ब से ही होती जो उनके दरवाजे पर जलता । उसने उसे कई बार छिपकर पत्थर से भी तोड़ा, परंतु मन को तसल्ली नहीं होती। वह यह सब सोच ही रहा था कि भीड़ में उसे किसी ने धक्का दिया तब वह यथार्थ के धरातल पर आया। एयर पिस्टल से निशाना लगाने का शौक उसे अपनी रगों में दौड़ रहे खून में घुलता जान पड़ रहा था। वह उससे विमुख होने के लालच को नहीं छोड़ पा रहा था। कभी वह उसे कल्पना में चला कर देखता, कभी खरीद लेता, कभी सोचता कि देखने के बहाने से लेकर भाग जाए, मेले में इतनी भीड़ है कौन देखेगा? परंतु पकड़े जाने का भय उसके रोंगटे खड़े कर देता, फिर मां पूछती- कहां से आए इतने पैसे? तो क्या जवाब देता?

सोचता हुआ वह चुपचाप एयर पिस्टल को देखता रहा, फिर उसने साहस कर उसका मूल्य मालूम किया। उसने सोचा कम से कम उसे एयर पिस्टल छूने तो मिल ही जाएगा, परंतु विक्रेता ने उसे बगैर दिखाएं ही कहा- "चार सौ रुपए का है।"

कैलाश के पास सिर्फ बीस रुपए थे। उसे अपनी बेबसी पर बहुत क्रोध आया। वह मेले में घूमता रहा। घूमते घूमते उसने सोचा- "क्यों ना इन पैसों को बचा कर रखा जाए और अगली बार के मेले तक मां से छुपा कर कुछ और पैसे इकट्ठे कर एयर पिस्टल खरीदा जाए।" यह विचार उसे गुल्लक बिकते देखकर आया। उसने एक रुपए में एक गुल्लक खरीदी और वह तुरंत घर आकर मां से आंख बचाकर एक एक रुपया कर, पैसे इकट्ठे करने में जुट गया।

आज जब उसने गणेश चौथ के मेले की शुरुआत की घोषणा सुनी तो वह खुशी से झूम उठा । वह तुरंत भागकर मां के पास जा पहुंचा, और मां को मेला शुरू होने की बात बतायी। उस दिन शाम बहुत धीरे धीरे चल कर रात के घर में पहुंची। शायद कैलाश की खुशी की खबर सुनकर उसने अपने पैरों पर मेंहदी रख ली हो। घर पहुंच कर कैलाश ने उल्टा सीधा खाना खाया और सो गया। रात में जब मां सो गई उसने अपने चारपाई के नीचे से गुल्लक उखाड़ी, उसमें से सब रुपए निकालकर गिने, जो पूरे चार सौ तीस रुपए थे। फिर सबको रखकर सो गया।

परंतु उसे नींद नहीं आ रही थी। मेले में जाकर एयर पिस्टल खरीदने की इच्छा उसके कमरे में नींद को घुसने ही ना दे रही थी। वह तो चौकीदार की तरह दरवाजे पर डट गई थी। अपने अलावा किसी और का कमरे में प्रवेश करना, उसके लिए गवारा नहीं था। एयर पिस्टल को हाथ में लेकर तरह-तरह की मुद्राओं में खड़े होना, घर में रखी विभिन्न वस्तुओं पर निशाना लगाना । रजनीश ताऊ के बल्ब को उड़ाना, एयर पिस्टल को कभी कंधे पर, कभी दोनों हाथों में लेकर फिल्मी हीरो की नकल करना आदि कल्पनाएं उसके मस्तिष्क में लहरों की तरह एक के बाद एक उठती जा रही थी। चार दिनों की दीवार को गिराते हुए सात तारीख आ धमकी। कैलाश सुबह उठा, अपना थेला उठाया और निकल पड़ा रेलवे स्टेशन की ओर। आज उसे ज्यादा ग्राहक मिलने की उम्मीद अतिरिक्त सुख था। मेला देखने के लिए दूर-दूर से लोग चंदौसी आते हैं। शाम होने से पहले ही कैलाश घर आ गया। आज उसे उम्मीद के अनुसार ही ग्राहक मिले थे। घर आकर वह नहाया, नए कपड़े पहने, अपने मोहल्ले के सभी बच्चों के साथ वह गणेश जी की रथ यात्रा देखने के लिए निकल पड़ा । सभी रथ यात्रा की स्वचालित, रंग बिरंगी विभिन्न आकार प्रकार की झांकियों को देखकर खुश हो रहे थे। वे झांकियों के विविध करतवों की आनंद बरसा में भीगे जा रहे थे। सारी चंदौसी बिजली के प्रकाश की ड्रेस में सजी एक फैंसी गुड़िया की तरह लग रही थी । जगह जगह बिजली के खंभों पर लाउडस्पीकर लगे हुए थे, जो पल-पल गणेश जी की रथ यात्रा किस गली में, इस मोहल्ले से गुजर रही है इसकी खबर दे रहे थे तथा बीच-बीच में आरती तथा भक्ति गीत कानफोडू आवाज मैं बज रहे थे। परंतु कैलाश को यह सब नीरस लग रहा था। उसे तो मेले में जाकर एयर पिस्टल खरीदने की धुन थी।

रथ यात्रा गुजर जाने के बाद जनसमूह आसपास के गांव से आकार गलियों में होता हुआ मेला ग्राउंड की और जाने के लिए उमड़ने लगा। कैलाश भी उस जन समूह में समा गया। लोगों के अगल बगल से होता हुआ, कैलाश अपने छोटे-छोटे पैरों से मेले की ओर बड़ा जा रहा था जैसे कोई मछली अपने पखों से पानी को चीरती अपने शिकार की ओर लपकती है।

मेले में पहुंचकर उसने खिलौनों की दुकानों को अपनी पैनी दृष्टि से खंगालना शुरू कर दिया। बहुत सी दुकानें पार कर दी पर उसे एयर पिस्टल कहीं भी दिखाई ना दिया। उसे निराशा और असफलता का नशा सा होने लगा। कई दुकानदारों से उसने मालूम किया- "एयर पिस्टल है आपके पास क्या?"

"नहीं" सभी ने यही जवाब दिया।

मेले में भीड़ बहुत थी, वह थक चुका था। एक बार मन में आया कि घर चला जाए, और कल फिर आकर देखें परंतु उसका मन कोई समझौता करने को तैयार नहीं था।

दूसरों को आइसक्रीम, चाट, जलेबी, टिक्की आदि खाते देख उसके मुंह में पानी भर भर आता परंतु उसने कुछ ना खाया। वह घूमता रहा। मेले की दूसरी तरफ एक बहुत बड़ी खिलौनों की दुकान लगी दिखाई दी, कैलाश फुर्ती से उधर गया। वहां जाकर उसने देखा कई एयर पिस्टल नए नए डिजाइन में रखे हैं। कैलाश का मन एयर पिस्टल देखकर उछलने लगा। उसकी सारी थकान

जाती रही । बहुत देर तक तो वह अपलक एयर पिस्टल की आकर्षक रचना को निहारता रहा।

उत्साह पूर्वक उसका मूल्य मालूम किया- "भाई साहब एयर पिस्टल कितने का है?" और उसे हाथ में देखने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"छः सौ रुपए का है यह"

दुकानदार ने उसे गौर से देखते हुए कहा और उसके हाथ में दिखाने के इशारे को नजरअंदाज कर दिया। दुकानदार के मुंह से यह शब्द सुनकर वह सन्न रह गया। जैसे किसी ने धकेल दिया हो और वह खाई में औंधे मुंह गिर पड़ा हो ।

उसकी तंद्रा भंग हुई जब उसने देखा उसके पीछे अपने पिता के साथ उसी की उम्र का एक अच्छे घर का लड़का खड़ा है और वह भी एयर पिस्टल को लेने की ज़िद कर रहा है । उसके पिता ने आगे बढ़कर दुकानदार से एयर पिस्टल की तरफ इशारा किया दुकानदार ने बिना मूल्य बताएं एयर पिस्टल उनके हाथों में रख दिया।

"कितने रुपए का है जी यह?" लडके के पिता ने पूछा।

"केवल छः सौ रुपए का" दुकानदार ने सहज भाव से उत्तर दिया।

लड़के के पिता ने छः सौ रुपए निकाल कर दुकानदार की ओर बढ़ा दिए । दुकानदार ने एक छर्रे का डिब्बा उन्हें देते हुए मुस्कुराकर रुपए रख लिए। वह लड़का एयर पिस्टल अपने हाथ में लेकर खुश होता हुआ आगे बढ़ गया।

कैलाश को सुनायी दिया कि .....उसकी अंग्रेजी की मैम कह रही हैं- "तुम्हारा निशाना ठीक नहीं" लगा कैलाश!

तुम एक अच्छे निशानेबाज.....?